

आगरा प्रान्त में मुगलकालीन कृषि व्यवस्था

Paper Submission: 00/00/2020, Date of Acceptance: 00/00/2020, Date of Publication: 00/00/2020

सारांश

सिकन्दर लोदी ने आगरा के भौगोलिक महत्व को देखते हुये इसे अपनी राजधानी बनाया था। कालान्तर में इसके भौगोलिक एवं आर्थिक महत्व के अतिरिक्त दक्षिण भारत पर नियंत्रण की सुविधा को देखते हुये मुगलों ने भी इसे साम्राज्य की राजधानी होने का गौरव प्रदान किया। प्रांत के रूप में आगरा अपने कृषि उत्पाद एवं देशी एवं विदेशी व्यापार के लिए समस्त मुगलकाल में महत्वपूर्ण बना रहा।

मुख्य शब्द : सिकन्दर लोदी, उपजाऊ भूमि, कृषि व्यवस्था

प्रस्तावना

उत्तम कृषि हेतु उपजाऊ भूमि और जल संसाधनों की विपुलता होने के कारण मुगलकाल में यह सूबा राजस्व आय के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। कृषि परंपरागत तरीके से की जाती थी और अधिकांश फसलें जैसे गेहूँ, जौ, ज्वार, चना बाजरा आदि की पैदावार सूबे में होती थी। कृषि कार्य हेतु भूमि को उपयोगिता के आधार पर उत्तम, माध्यम एवं सामान्य (पौलज, छाछर, परती) में बांटते हुये सरकार द्वारा अपना राजस्व निर्धारण किया जाता था। खेती के प्रति किसानों को आकृषित करने के लिए मुगल शासकों द्वारा समय-समय पर किये गये सुधारों और दी गई सुविधाओं का खोज परख अध्ययन शोध में किया गया है।

भौगोलिक स्थिति

"आइन-ए-अकबरी में शेख अबुल फजल ने प्रान्त की सीमाओं का वर्णन करते हुये लिखा है कि यह सूबा पूरव में घाटमपुर (26+80) और प्रश्चिम में पलवल (27+77) उत्तर में कन्नौज (27+79) तथा दक्षिण में चन्देरी (24+78) तक स्थित है।¹

आइन के अनुसार ही आगरा प्रांत को बारह सरकारों में विभाजित किया गया था। इन सरकारों के गठन में कृषि राजस्व आय का महत्वपूर्ण योगदान होता था। बादशाह अकबर ने अपने शासन में "राज्य की आय" के अनुरूप प्रान्तों की सीमाओं का समय-समय पर पुनः निर्धारण कराना सुनिश्चित कराया।

सूबे में होने वाली प्रमुख फसलें

उत्पादन की दृष्टि से कम पानी वाली फसलें जो पठारी भूमि में पैदा होती थीं। उनमें प्रमुख अरहर, मूँग, ज्वार, बाजरा, बदनजीर, अरंडी, कुसुम, मनदूका, चना, अदरक आदि शामिल थे। इनसे सरकार को कम राजस्व आय प्राप्त होती थी। कुछ फसलें ऐसी थीं जिसके लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती थी। इनमें से मुख्य है तंबाकू, गेहूँ, आलू, धान, गन्ना, नील आदि। अधिक उपजाऊ भूमि में इनकी पैदावार प्रमुख रूप से होती थीं।² अधिक राजस्व हेतु शासन द्वारा इन फसलों के उत्पादन के लिए किसानों को प्रोत्साहन और आवश्यक सुविधायें दिये जाने का उल्लेख मिलता है। खालसा भूमि में की जाने वाली खेती और उससे प्राप्त आय भी शासन की आय का प्रमुख श्रोत होता था। कृषि ग्रामीण अर्थ व्यवस्था का आधार थी और किसान उसके मजबूत पाये। कृषि भूमि की नाप तोल एवं राजस्व निर्धारण के लिए शासन द्वारा टोडरमल भूमि व्यवस्था बनाये रखी गई।

आगरा प्रान्त के प्रत्येक क्षेत्र में नगदी फसलों में कपास और नील का उत्पादन किया जाता था। नील से रंगाई की जाती थी। वयाना का नील न केवल आगरा बल्कि सम्पूर्ण मुगल साम्राज्य में सबसे ऊपर बहतर था।³ वयाना की अपेक्षा घटिया गुणवत्ता वाला नील कनुआ, हिंडोन, वसावर, टोडा में⁴ एवं कोल, खुर्जा तथा जलाली में पैदा होता था।⁵ नील का तीसरा क्षेत्र मेवात था⁶ दूसरी फसल "अल" की खेती होती थी जिससे लाल रंग बनाया जाता था, और जिसकी खेती बहुत सीमित थी। दस्तूर हल्कों इराइच, फायुन्द और कालपी में

रूपचन्द्र

प्रवक्ता,

इतिहास विभाग,

श्री खुशीराम महविद्यालय, खैर,

अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

पैदा होता था।⁷ कपास की खेती के बारे में कम जानकारी मिलती है। डब्लू0एच0 मोर लेण्ड के अनुसार सिंचाई की कमी के कारण इसकी खेती कम होती थी।⁸ किन्तु आइन-ए-अकबरी में प्रवेश फसलों की सूची में कपास का वर्णन मिलता है।⁹ आइन के वर्णन से पता चलता है कि खेती उपजाऊ भूमि तक सीमित थी। कृषि भूमि को तीन भागों में बांटा गया था उत्तम, मध्यम, खराब अकबर के शासनकाल में सभी प्रकार की फसलों एवं विभिन्न प्रकार की भूमि और उसकी पैदावार का आंकड़ा सुनिश्चित किया गया था।¹⁰ शहरों के नजदीक सब्जियों की खेती की जाती थी। इसमें शलजम, विभिन्न प्रकार के सैम, आलू, चुकन्दर आदि प्रमुख थे।¹¹ अच्छी तरह बनाये गये बगीचों में अनेक प्रकार के फल लगाये जाते थे जिसमें आम, इमली, नारंगी, सेब, अन्ननास, तरबूज, कस्तूरी और छायादार वृक्ष थे।¹²

आइन-ए-अकबरी में वयाना के आम तथा अंगूर और तरबूज की खेती के बारे में भी विस्तार से बताया गया है।¹³

कृषि के उपकरण

मिट्टी की किस्म को देखते हुये उसके ऊपर भारी "हल" का प्रयोग किया जाता था। आगरा प्रान्त की उपजाऊ मिट्टी इतनी भारी (सख्त) नहीं थी कि उसमें गहराई से "हल" चलाया जा सके। किन्तु जहाँ भारी "हल" और गहरी जुताई की आवश्यकता होती थी वहाँ इस "हल" का प्रयोग किया जाता था।¹⁴ कृषि हेतु जलवायु और मानसूनी वर्षा की समय सीमा निश्चित होती थी। "हल" में छोटा सा लोहे का फाल लगा होता था जो आगे से नुकीला और पीछे से चौड़ा होता था। वह मिट्टी में 6 से 9 इंच तक गहरी जुताई कर सकता था। इसको खींचने के लिए दो बैलों का प्रयोग किया जाता था। कम पानी वाले क्षेत्र में इस प्रकार की विधि का प्रयोग किया जाता था। इस प्रकार लोहे के प्रयोग का पूर्व मध्यकाल में पता नहीं चलता जबकि यह भी बात सत्य है कि लोहे का उपयोग भारतीय किसानों की पहुँच से परे नहीं था।¹⁵ उपकरणों के आधार माना जा सकता है कि आगरा प्रान्त के किसानों की स्थिति ठीक रहे होगी। यह व्यवस्था ऊंचे स्तर की ओर संकेत करती है जो प्रमुख बुवाई के तरीकों में बीज प्रसारण सबसे अधिक प्रचलित था। बीज डील और कपास के मामले में डिबलिंग तकनीकी का प्रयोग

किया जाता था।¹⁶ खेत में काम करने के लिए कड़ी मेहनत की जरूरत पड़ती थी और अधिक पूंजी के आवश्यकता किसानों को होती थी। तकनीकी के आधार पर खेत में बीज डालने के बाद पाटा लगाने की आवश्यकता होती थी क्योंकि बीज खेत में उभरा हुआ न रह जाय। पाटा के बिना सूरज की तेज धूप के कारण बीज सूख जाता था तथा पछी दाना खा जाते थे तो खेत खाली रह जाता था और इसे बीजमार कहा जाता था।

सिंचाई के साधन

आगरा प्रान्त में सिंचाई के लिए टैंक और क्यूे का प्रयोग किया जाता था। नहरों के द्वारा सिंचाई का अभाव था जबकि प्रान्त के उत्तर और दक्षिण में इस प्रकार के सुविधा पायी जाती थी।¹⁷ आगरा प्रान्त में फसलों की सिंचाई के लिए कृतिम साधनों में सबसे आम साधन क्यूे से पानी निकालने के लिए विभिन्न उपकरणों का प्रयोग किया जाता था। उपकरणों में फारसी पहिया, चरस और ढेंकुली का उल्लेख मिलता है। आगरा प्रान्त में फारसी पहिये का अभाव था। ये प्रणाली अधिक लागत के कारण किसानों की पहुँच से बाहर थी।¹⁸ वयाना क्षेत्र में 500 टन नील के निर्माण के लिए चरस क्यूओं से पाने निकाला जाता था।¹⁹ बड़े क्यूे के बनाने में फारसी पहिये से भी अधिक खर्च होता था। जिससे मालूम पड़ता है कि फारसी पहिये का बनाना भारतीय किसानों की पहुँच से बाहर नहीं था। इसका कारण यह जान पड़ता है कि इसकी तकनीकी यहाँ के किसानों तक पूर्ण रूप से नहीं पहुँच पायी थी।

निष्कर्ष

इस प्रान्त की कृषि व्यवस्था को यहाँ की भौगोलिक दृष्टि से देखते हुये इस पर शोधार्थी द्वारा गहन अध्ययन किया गया है। सूबे में कृषि का विस्तार, मिट्टियों के प्रकार, कृषि उत्पादन के प्रकार एवं फसलें तथा बुवाई के साधन एवं कृषि उपकरण तथा सिंचाई के साधनों पर भी गहन दृष्टिपात किया गया है। निष्कर्ष स्वरूप यह उल्लेख करना समीचीन है कि आगरा अपने कम क्षेत्रफल के बावजूद राज्य को सर्वाधिक आय उपलब्ध कराता था। निम्न टेबिल से भी यह स्पष्ट है।²⁰

Table 2.2

Comparative Revenue Potential of some Mughal Subas, c. 1595 (in thousand dams)

S. No.	Suba	Map-Area (sq.kms.)	Jama' (dams)	4:3	Index (Agra=100)
1.	Agra	1,19,132	5,46,250	4.585.25	100
2.	Allahabad	89,648	2,12,428	2.369.58	51.68
3.	Awadh	68,539	2,01,758	2,943.70	64.20
4.	Delhi	1,73,004	6,01,616	3,477.47	75.84
5.	Lahore	1,40,969	5,59,458	3,968.66	86.55
6.	Malwa	2,97,695	2,40,695	808.53	17.63
7.	Multan	1,70,505	1,51,404	889.97	19.37

04/Antho/ 2020/12451

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आइने-ए-अकबरी पृष्ठ-441
2. वही आइने पृष्ठ 297
3. वही आइने पृष्ठ 442
4. पिल्जर्ट पृष्ठ-14
5. वही पिल्जर्ट पृष्ठ -15
6. वही पिल्जर्ट पृष्ठ -15
7. आइने पृष्ठ-260-62
8. डब्लू0 एच0 मोर लेण्ड अकबर की मृत्यु के समय का भारत पृष्ठ-25
9. आइने खण्ड-III पृष्ठ-442
10. आइने पृष्ठ-297 से 301
11. पिल्जर्ट पृष्ठ -48
12. आइने पृष्ठ-67-68
13. आइने पृष्ठ-67 व 442
14. हरवंश मुखिया मध्यकालीन उत्तर भारत में कृषि प्रौद्योगिकी दिल्ली 1993 पृष्ठ-220-23
15. एन0जी0 मुखर्जी भारतीय कृषि कलकत्ता (1915) पृष्ठ-92-93 इरफान हबीव कृषि प्रणाली पृष्ठ-24-25
16. एम0एस0 दक्षिण भर्ता में ड्रिल पशु पालन पर धर्मपाल भारती विज्ञान और प्रौद्योगिकी 18वीं सदी में हैदराबाद (1983) पुनः मुद्रण पृष्ठ 257-261
17. इरफान हबीव कृषि प्रणाली पृष्ठ-49 से 61
18. इरफान हबीव प्रौद्योगिकी परिवर्तन और समाज पी0आई0एच0सी0 1969 विभिन्न पत्र पत्रिकाएँ
19. बाबरनामा पृष्ठ 448
20. इरफान हबीव एटलस पी0पी0-VII-VIII (CO1 3)